विद्या सर्वार्थि साधिका

आनंदालय

सामयिक परीक्षा 3

कक्षा :बारहवीं

विषय: हिंदी

दिनांक : 28□12□2019

अधिकतम अंक 80

निर्धारित समय 3 घंटे

सामान्य निर्देश

- इस प्रश्न पत्र में तीन खंड हैं क□ख□ग।
- तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव प्रत्येक खंडों के उत्तर कमशः दीजिए ।
- एक अंक के प्रश्नों का उत्तर **15 20** शब्दों में लिखिए।
- दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर **30 40** शब्दों में लिखिए।
- तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर **60 70** शब्दों में लिखिए।
- चार अंकों के प्रश्नों का उत्तर **80 100** शब्दों में लिखिए।
- पा□ अंकों के प्रश्नों का उत्तर **120 150** शब्दों में लिखिए।

ख□ण्ड क

1 निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए □

पता नहीं क्यों□ उनकी कोई नौकरी लंबी नहीं चलती थी। मगर इससे वह न तो परेशान होते□ न आतंकित□ और न ही कभी निराशा उनके दिमाग में आती। यह बात उनके दिमाग में आई कि उन्हें अब नौकरी के चक्कर में रहने के बजाय अपना काम शुरू करना चाहिए। नई ऊ□चाई तक पहु□चने का उन्हें यही रास्ता दिखाई दिया। सत्य है□ जो बड़ा सोचता है□ वही एक दिन बड़ा करके दिखाता है और आज इसी सोच के कारण इनकी गिनती बड़े व्यक्तियों में होती है। हम अक्सर इंसान के बड़े छोटे होने की बात करते हैं□ पर दरअसल इंसान की सोच ही उसे बड़ा या छोटा बनाती है। स्वेट मार्डेन अपनी पुस्तक 'बड़ी सोच का बड़ा कमाल' में लिखते हैं कि यदि आप दरिद्रता की सोच को ही अपने मन में स्थान दिए रहेंगे□ तो आप कभी धनी नहीं बन सकते□ लेकिन यदि आप अपने मन में अच्छे विचारों को ही स्थान देंगे और दरिद्रता□ नीचता आदि कुविचारों की ओर से मु□ मोड़े रहेंगे और अपने मन में कोई स्थान नहीं देंगे□ तो आपकी उन्नति होती जाएगी और समृद्धि के भवन में आप आसानी से प्रवेश कर सकेंगे। 'भारतीय चिंतन में ऋषियों ने ईश्वर के संकल्प मात्र से सृष्टि रचना को स्वीकार किया है और यह संकेत दिया है कि व्यक्ति जैसा बनना चाहता है□ वैसा बार बार सोचे। व्यक्ति जैसा सोचता है, वह वैसा ही बन जाता है।' सफलता की ऊ□चाइयों को छूने वाले व्यक्तियों का मानना है कि सफलता उनके मस्तिष्क से नहीं□ अपितु उनकी सोच से मिली है। व्यक्ति में सोच की एक ऐसी जादुई शक्ति है कि यदि वह उसका उचित प्रयोग करे□ तो कहा□ से कहा□ पहु□च सकता है। इसलिए सदैव बड़ा सोचें□ बड़ा सोचने से बड़ी उपलब्धियां ह□सिल होंगी□ फ़ायदे बड़े होंगे और देखते ही देखते आप अपनी बड़ी सोच द्वारा बड़े आदमी बन जाएंगे□ इसके लिए हैजलिट कहते हैं' महान सोच जब कार्यरूप में परिणत हो जाती है□ तब वह महान कृति बन जाती है।

(क) गद्यांश में किस प्रकार के व्यक्ति के बारे में चर्चा की गई है□ ऐसे व्यक्ति ऊ□चाई तक पहु□चने का क्या मार्ग अपनाना पसंद करते हैं□ (2)

(ख) समृद्धि और उन्नति पाने के लिए आप कौन' सा मार्ग अपनाने का सुझाव देंगे□ (2)

(ग) भारतीय विचारधारा में संकल्प और चिंतन का क्या महत्व है□ (2)

(घ) व्यक्ति की किस जादुई शक्ति की बात की गई है और इसके परिणाम क्या हैं□ (2)

(ङ) हमेशा बड़ा सोचने से बड़ी उपलब्धियां ह□सिल होती हैं। सिद्ध कीजिए। (2)

(च) मानव महान कृति की रचना किस आधार पर कर सकता है□ (1)

(छ) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। (1)

2 निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

इस पृथ्वी पर
एक मनुष्य की तरह
मैं जीना चाहता हूँ
वे खत्म करना चाहते हैं
बैक्टेरिया की तरह
उनके तमाम हथकंडों के बावजूद
मैं नहीं मरता
उपेक्षा, भूख और तिरस्कार से लड़ते, झगड़ते
बढ़ गई है मेरी प्रतिरोधक क्षमता
मैं मृत्यु से नहीं डरता
और अमरत्व में मेरा विश्वास नहीं
लेकिन मैं नहीं चाहता प्रतिदिन मरना
थोड़ा, थोड़ा
किंचित विनम्रता
किंचित अकड़
और मित्र हाथों के साथ
बेहतर सृष्टि के लिए
झुक जाए एक साथ
असंख्य नन्हें, नन्हें हाथ
अधूरी लड़ाई बढ़ाने के लिए
फल के रस की तरह
मैं उनके रक्त में घुल जाना चाहता हूँ
मैं एक मनुष्य की तरह मरना चाहता हूँ।

(क) कवि की प्रतिरोधक क्षमता कैसे बढ़ गई है, समझाइए। (1)

(ख) 'हथकंडे' शब्द का तात्पर्य क्या है, और यह किसके लिए प्रयुक्त हुआ है? (1)

(ग) "मैं नहीं चाहता प्रतिदिन मरना ।" पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। (1)

(घ) पद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

अथवा

क्या रोकेंगे प्रलय मेघ ये, क्या विद्युर्त घन के नर्तन?
मुझे न साथी रोक सकेंगे, सागर के गर्जर्न तर्जन।
मैं अविराम पथिक अलबेला रूके न मेरे कभी चरण?
शूलों के बदले फूलों का किया न मैंने मित्र चयन।
मैं विपदा में मुसकाता नव आशा के दीप लिए?
फिर मुझको क्या रोक सकेंगे जीवन के उत्थान पतन।
मैं अटका कब, कब विचलित मैं, सतत डगर मेरी संबल?
रोक सकी पगले कब मुझको यह युग की प्राचीर निबल।
आंधी हो, ओले वर्षा हो, राह सुपरिचित है मेरी?
फिर मुझको क्या डरा सकेंगे ये जग के खंडर्न मंडन।
मुझे डरा पाए कब अंधड़, ज्वालामुखियों के कंपन?
मुझे पथिक कब रोक सके हैं, अग्निशिखाओं के नर्तन।
मैं बढ़ता अविराम निरंतर तर्न मन में उन्माद लिए?
फिर मुझको क्या डरा सकेंगे, ये बादर्ल विद्युत नर्तन।

(क) कविता में आए मेघ, सागर की गर्जना और ज्वालामुखी किनके प्रतीक हैं ? कवि ने उनका संयोजन यहाँ क्यों किया है? 1

(ख) 'शूलों के बदले फूलों का किया न मैंने मित्र चयन।' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए। 1

(ग) 'युग की प्राचीर' से क्या तात्पर्य है? 1

(घ) पद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

खण्ड ख

3 निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 120 से 150शब्दों का एक अनुच्छेद लिखिए । (5)

(क) घनी अंधेरी रात और आकाश में चमकते सितारे

(ख) मेरा प्रिय टाइम पास

(ग) कमीज़ का बटन

(घ) सावन की पहली झड़ी

4 पानी का संकट–पहल का इंतज़ार' विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए संपादक राजस्थान पत्रिका अहमदाबाद (5)
गुजरात को 80 100 शब्दों में पत्र लिखिए।

अथवा

विद्यालय में होने वाली वार्द विवाद प्रतियोगिता के संबंध में एक बैठक होने वाली है। इसके लिए एक कार्य सूची तैयार कीजिए।

5 निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 15 20 शब्दों में दीजिए । 1 5 5

(क) किन गुणों के होने से कोई घटना समाचार बन जाती है

(ख) समाचार लेखन की कितनी शैलियाँ हैं

(ग) संपादकीय किसी नाम के साथ नहीं छापा जाता है क्यों

(घ) वॉचडॉग पत्रकारिता से क्या तात्पर्य है

(ङ) अंशकालिक पत्रकार किसे कहते हैं

6 कविता में शब्द चयन की भूमिका को कारण सहित स्पष्ट करें। उत्तर 80 100 शब्दों में लिखिए। (5)

अथवा

'भारतीय चंद्रयान–एक बड़ी उपलब्धि' विषय पर एक आलेख 80 100 शब्दों में तैयार कीजिए ।

अथवा

'वाहनों की बढ़ती संख्या से उत्पन्न समस्याएँ' विषय पर एक फ़ीचर 80 100 शब्दों में तैयार कीजिए ।

खण्ड ग

7 निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर 30 40 शब्दों में दीजिए । 2 3 (6)

धूत कहौ अवधूत कहौ रजपूतु कहौ जोलहा कहौ कोऊ।
काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब काहूकी जाति बिगार न सोऊ।।
तुलसी सरनाम गुलामु है राम को जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ।
माँगि कै खैबो मसीत को सोइबो लैबोको एकु न दैबको दोऊ।।

(क) कवि किन पर व्यंग्य कर रहे हैं और क्यों कर रहे हैं स्पष्ट कीजिए।

(ख) कवि की सांसारिक बंधनों में कोई रूचि नहीं थी।सिद्ध कीजिए।

(ग) उपर्युक्त छंद के आधार पर तुलसी के भक्त हृदय पर टिप्पणी कीजिए।

अथवा

कल्पना के रसायनों को पी
वीज गल गया नि□शेष□
शब्द के अंकुर फूटे□
पल्लर्व पुष्पों से नमित हुआ विशेष।
झूमने लगे फल□
रस अलौकिक□
अमृत धाराए□फूटतीं
रोपाई क्षण की□
कटाई अनंतता की
लुटते रहने से जरा भी नहीं कम होती।
रस का अक्षय पात्र सदा का
छोटा मेरा खेत चौकोना।

(क) 'रस अलौकिक, अमृत धाराएँ फूटतीं' अलौकिक धाराएँ कब, कहाँ और क्यों फूटती हैं?

(ख) रस के अक्षय पात्र की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए □

(ग) कवि ने कवि कर्म की तुलना किससे की है□

8 निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश पर आधारित काव्र्य सौंदर्य बोध संबंधी प्रश्नों के उत्तर**30 40** शब्दों में दीजिए □**2□2** (4)

नभ में पाँ□ि बँ□बगुलों के पंख□
चुराए लिए जातीं वे मेरी आँ□
कजरारे बादलों की छाई नभ छाया□
तैरती साँ□की सतेज श्वेत काया।
हौल हौल जाती मुझे बाँ□निज माया से।
उसे कोई तनिक रोक रक्खो।
वह तो चुरा लिए जाती मेरी आँ□
नभ में पाँ□ि बँ□ी बगुलों की पाँ□।

(क) भार्व सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

(ख) इन पंक्तियों की भाषागत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा

उहा□राम लछिमनहि निहारी। बोले बचन मनुज अनुसारी।।

अर्ध राति गइ कपि नहिं आयउ।राम उठाइ अनुज उर लायऊ।।

सकहु न दुखित देखी मोहि काऊ।बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ।।

मम हित लागि तजेहु पितु माता।सहेहु विपिन हिम आतप बाता।।

(क) काव्यांश के कथ्य के सौंदर्य को स्पष्ट कीजिए।

(ख) इन पंक्तियों के भावगत सौंदर्य पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

9 निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर **60 70** शब्दों में दीजिए □ **3□2** (6)

(क) बाल-सुलभ हठ और माँ द्वारा बच्चे को बहलाने के लिए किए गए प्रयासों को 'रुबाइयों' के आधार पर लिखिए।

(ख) खुद से परदा खोलने से क्या आशय है □समझाइए।

(ग) कुंभकरण ने रावण को किस सच्चाई का आईना दिखाया था□इससे कुंभकरण का कौर्न सा गुण ज्ञात होता है □

10 निम्नलिखित में से किसी एक गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर 60 70 शब्दों में दीजिए 23 (6)

अब तक साफ़िया का गुस्सा उतर चुका था। भावना के स्थान पर बुद्धि धीरे धीरे उस पर हावी हो रही थी। नमक की पुड़िया ले जानी है पर कैसे अच्छा अगर इसे हाथ में ले लें और कस्टमवालों के सामने सबसे पहले इसी को रख दें लेकिन अगर कस्टमवालों ने न जाने दिया तो मज़बूरी है छोड़ देंगे। लेकिन फिर उस वायदे का क्या होगा जो हमने अपनी मा से किया था हम अपने को सैयद कहते हैं। फिर वायदा करके झुठलाने के क्या मायने जान देकर भी वायदा पूरा करना होगा। मगर कैसे अच्छा अगर इसे कीनुओं की टोकरी में सबसे नीचे रख लिया जाए तो इतने कीनुओं के ढ़ेर में भला कौन इसे देखेगा और अगर देख लिया नहीं जी फलों की टोकरिया तो आते वक्त भी किसी की नहीं देखी जा रही थीं। उधर से केले उधर से कीनु सब ही ला रहे थे तो जा रहे थे। यही ठीक है फिर देखा जाएगा।

(क) 'भावना के स्थान पर बुद्धि धीरे-धीरे उस पर हावी हो रही थी।' से क्या तात्पर्य है

(ख) साफ़िया के मन में क्या द्वंद्व चल रहा था

(ग) अंत में साफ़िया ने जो निर्णय लिया क्या वह उचित था

अथवा

यह भी क्या कि दस दिन फूले और फिर खंखड़-के-खंखड़- ' दिन दस फूला फूलिके खंखड़ भया पलास!' ऐसे दुमदारों से तो लडूरे भले। फूल है शिरीष। वसंत के आगमन के साथ लहक उठता है आषाढ़ तक जो निश्चित रूप से मस्त बना रहता है। मन रम गया तो भरे भादों में भी निर्घात फूलता रहता है। जब उमस से प्राण उबलता रहता है और लू से हृदय सूखता रहता है एकमात्र शिरीष कालजयी अवधूत की भाति हर फूर्ल पत्ते को देखकर मुग्ध होने लायक हृदय विधाता ने नहीं दिया है पर नितांत ठूठ भी नहीं हू। शिरीष के पुष्प मेरे मानस में थोड़ा हिल्लोल ज़रूर पैदा करते हैं।

(क) अवधूत किसे कहते हैं शिरीष को कालजयी अवधूत क्यों कहा गया है

(ख) शिरीष जीवन की अजेयता का मंत्र कैसे प्रचारित करता रहता है

(ग) "मन रम गया तो भरे भादों में भी निर्घात फूलता रहता है।" आशय स्पष्ट कीजिए।

11 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए (42)+(21) (10)

(क) आर्थिक विकास में जार्ति प्रथा बाधक है तर्क सहित 80 100 शब्दों में समझाइए।

(ख) समता का अर्थ स्पष्ट करते हुए बताइए कि समाज में समता की आवश्यकता क्यों है 80 100 शब्दों में समझाइए।

अथवा

(ग) इंदर सेना आज के युवा का प्रेरणा स्रोत हो सकती है क्या आपके स्मृर्ति कोष में ऐसा कोई अनुभव है जब बरसात के पानी के संचयन के लिए युवाओं ने कोई समाजोपयोगी कदम उठाया हो 80 100 शब्दों में उल्लेख कीजिए।

(घ) कालिदास और द्विवेदी जी ने शिरीष के फूल के लिए किस विशेषण का प्रयोग किया है 30 40 शब्दों में लिखिए।

12 निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर 80 100 शब्दों में दीजिए (43) (12)

(क) 'ऐन की डायरी' के अंश से प्राप्त होने वाली तीन महत्त्वपूर्ण जानकारियों का उल्लेख कीजिए।

(ख) 'भौतिक सुखों को ही युवा पीढ़ी ने परम लक्ष्य मान लिया है।' यशोधर बाबू के इस कथन की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

(क) वर्तमान समाज को दत्ता जी राव जैसे व्यक्तित्व की आवश्यकता है। दत्ता जी राव की चारित्रिक विशेषताओं के आलोक में स्पष्ट कीजिए।

(ख) हमारे पूर्वज नगर योजना से अधिक सौंदर्य-बोध के परिचायक थे? 'अतीत में दबे पाँव' पाठ में दिए गए तथ्यों के आधार पर जानकारी दीजिए।